फोटो सौजन्य
महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन
उदयपुर

बजाता है। यह लम्बी ध्वनि कई हिस्सों में विभाजित होती है और उसमें आवाज की सघनता भी धीरे-धीरे बढ़ती है या फिर उस तुरही की आवाज के बाद वह हाम-हाम बोलता है जिसका आशय है कि सबकुछ ठीक है- तब वह आवाज भी पर्वतों की खाइयों में गूंज जाती है। कोई भी व्यक्ति उसको विस्मृत नहीं कर सकता।

पूजादि में शंखवादन

टॉड को इस बात पर अचरज था कि धार्मिक कार्यों में इधर नियमत शंख बजाया जाता है और जो चाहे भी हो लेकिन सुरात्मक नहीं होता। भारतीय पूजा पद्धति में शंख वादन का महत्व रहा है और वह युद्ध के लिए घोष से लेकर पांचरात्र के नियम व पूजोपचार में प्रचलन में रहा है। पूर्वकाल में पंचवाद्य वादनाधिकार वाले राजाओं का वर्णन भी अभिलेखों में मिलता है।

उदयपुर में रहते हुए टॉड के साथ गायकों एवं संगीतकारों के बीच अपने कैटलानी और वेस्ट्रीज भी उपस्थित थे, ऐसा उसने 11 अक्टूबर, 1819 ई. के आत्म विवरण में लिखा है। महलों में प्रयाण आदि के अवसर पर नगाड़े उगा ध्वनि से बजते थे। स्वागत या अगवानी होने पर भी दरबारियों, लाल झंडे, शहनाई, नगाड़े और कवितापाठ करने वाले होते थे। जैसा कि कुम्भलगढ़ पहुंचने पर राणावत दौलत सिंह ने टॉड के दल का स्वागत किया था। ऐसा राजस्थान में अनेक स्थानों पर भी हुआ। टॉड ने यह भी लिखा है कि प्रत्येक सामन्त प्रमुख के पास गायकों और संगीतज्ञों का अपना दल होता था लेकिन कुछ सालों पहले सिंधिया उदयपुर के सबसे प्रतिष्ठित गायकों को अपने साथ ले गया। संभवत: राजस्थान में संगीतकारों का सबसे बड़ा दल कोटा महाराव के पास है। उनके पास सभी प्रकार के वाद्ययन्त्र है- फूंक से बजने वाले, तार वाले तथा घात-प्रतिघात से बजने वाले।

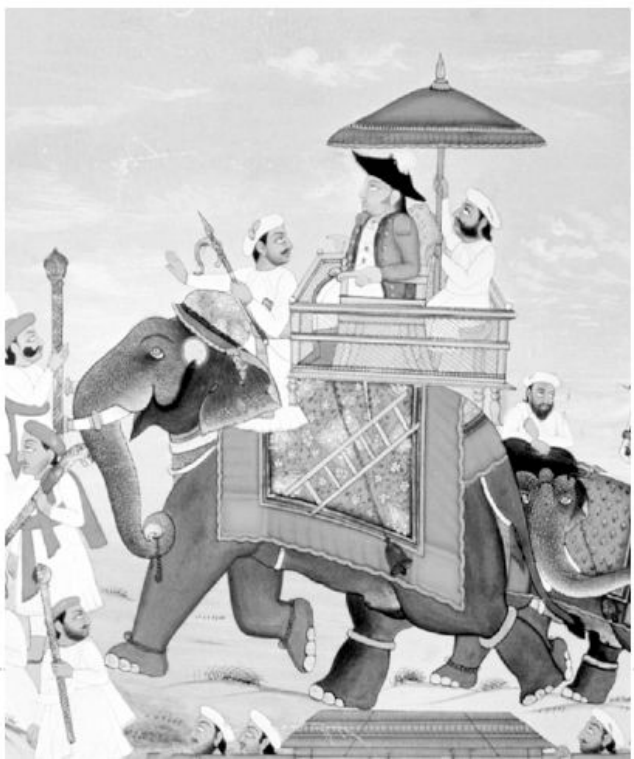

टॉड का विवरण रिसायत और अंग्रेजों के दौर का साक्ष्य है। इस काल में हालांकि संगीत के वाद्यों में नवाचार हो रहा था और सैनिक टुकड़ियों में भी अनेक नवीनताएं प्रवेश कर रही थीं लेकिन राजस्थान के रियासती ठाठ-बाट में संगीत की लहरियों का जो वर्णन टॉड ने किया, वह संक्षिप्त ही नहीं मगर एक दस्तावेज की तरह उपयोगी हैं।